राव चंद्रसेण री ख्यात

सम्पादक
कमलकांत व्यास
ए
जगदीश गहलोत

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नयी दिल्ली
एव
पंचशील प्रकाशन, यपुर

सह प्रकाशक भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
35 फिरोजशाह रोड नयी दिल्ली-11001

पंचशील प्रकाशन
फिल्म कालोनी जयपुर-302003

मूल्य एक सौ पचास रुपये

संस्करण प्रथम 1980

मुद्रक शीतल प्रिंटर्स
फिल्म कालोनी जयपुर-302003

राव चंद्रसेण री ख्यात

सब राठौड़ां री बगावतो लिख्यात । दाहाण[1], कूकणा देस[2], मद कल्याणी[3]

---

1. दाहाण—दाहानू (19° 36' उ० 73° 47' पू०) महाराष्ट्र थाणा जिले के सालसेट तालुका का एक छोटा बंदरगाह । बा गै 14, पृ 372, 418 419 ।

2. कूकणा देस—कोंकण देश । दमन गंगा नदी से दक्षिण में पश्चिमी घाट और समुद्र तट के बीच का समतल क्षेत्र कोंकण देश कहलाता है, जिसमें बम्बई और थाणा जिले भी गिने जाते हैं । बा गै, 1 2, पृ IX ।

इस क्षेत्र पर लगभग 810 ई से लगभग कोई साढे चार सौ वर्ष तक शिलाहारा घराने का आधिपत्य रहा था, परन्तु ये स्थानीय शासक ईसा की 10वीं सदी के लगभग तक मान्यखेट अथवा मान्यखेड के राष्ट्रकूटों के आधीन रहे । बा गै, 1 2, पृ 15 16 22 13 2, पृ 434 435 ।

3. मद कल्याणी—बीदर जिले में प्राचीन नगर (17° 53' उ० 76° 57' पू०) जिसकी स्थापना सोमेश्वर चालुक्य ने ईसा की 11वीं सदी के मध्य में की थी । बा ग, 1 2 पृ 215 ।

मान्यखेट (मालखेड) के राष्ट्रकूट राज्य के पतन के बाद भी इस क्षेत्र में राष्ट्रकूट घरानों का महत्व बना रहा । कल्याणी में चालुक्य राज्य के मातहत अथवा स्वाधीन शासकों के रूप में उनके अनेक उल्लेख मिलते हैं । कर्णाटिक व राष्ट्रकूट कीर्ति के रट्ट (राठौड़) शासकों की विभिन्न शाखाएं विशेष

राव चंद्रसेण री ख्यात

संवत सोळा सौ सताकीस सूं बत्तीस रा गळा रो ओ वृत्तांत मारवाड़ रा उण संघर्ष री साख भरे जठे एक पासे दिल्ली रो मोटो दळ हो अर दूजे पासे राव चंद्रसेण रो अटूट स्वाभिमान। मारवाड़ रा ई प्रतापी राजा राव चंद्रसेण राठौड़ रो जनम संवत 1598 रा सावण सुद 8 ने हुयो।आप राव मालदेव जी रा छठा कंवर हा।राव मालदेव जी आपरे पाटवी बेटा रामसिंह अर उदयसिंह रा हक दरकिनार कर चंद्रसेण ने आपणो उत्तराधिकारी थापियो।ई वात सूं भाईयां रे बिचे कजिया री नींपड़गी जी जनम भर चालती रही।संवत 1619 (1562 ई.) में राव मालदेव जी देवलोक हुया तद राव चंद्रसेण जी रो विधिवत राज्याभिषेक हुयौ।आप रामसिंह ने राज्य सूं निर्वासित कर दिया अर उदयसिंह (मोटा राजा) ने फलौदी री जागीर दई।ई अपमान रो बदलो लेवण सारू उदयसिंह अर रामसिंह अकबर री सरण में गया अर मुगलां ने मारवाड़ माथे चढ़ाई सारू उकसाया।मारवाड़ रा प्रतापी राजा राव मालदेव जी रै देवलोक हुया पछै, संवत 1619 (1562 ई.) में राव चंद्रसेण राठौड़ जोधपुर री गादी माथे बेठ्या।जद्यपि

मारवाड़ में ज्येष्ठाधिकार रो कोइ पक्को कानून नी हो, पण घणा बखत सूं मोटो बेटो ही पाट बैठतो आयो

राव चंद्रसेण री ख्यात

हो, पण घणा बखत सूं मोटो बेटो ही पाट बैठतो आयो हो। ई बात सू राव रा बड़ा भाई— रामसिंह, उदयसिंह अर रायमल रिसाय गया अर भाईयां रै बिचै कजिया री नींव पड़गी।

संवत १ ६१ ९ में ही रामसिंह सोजत में, उदयसिंह गंगाणी में अर रायमल डूंडा में विद्रोन सम दियो। राव चंद्रसेण जद फौज ले'र उणां नें दवावण पुग्या, तद राह देयो अर रायमल तो सामना किया बिना ही मैदाम छोड़'र भाग गया। पण असली घमासाण हुयो दिसरान १ ५ ६२ में 'लोहावट रै रणखेत' में। अठै उदयसिंह अर राव चंद्रसम क फौजा ग्यापस में भिड़गी। ओ जुद्ध ऐड़ो भगंकर हो के दोयूं पासे भारी कतलाम हुयो। उदयसिंह ऐड़ो कोंपियो क उण राव चंद्रसेण माथे कुल्हाड़ी सूं वार कर दियो, तद राव स खासमखास साथी रावल मेघराज उदयसिंह माथे पळटवार कर'र उणने घायल कर दियो। आखिर में उदयसिंह ने हार मानणी पड़ी। ई रे पछे १ ५ ६३ में नाडोल रै जुद्ध में राव चंद्रसेण रामसिंह ने भी धूळ चटा दी, अठे सूं हार'र समसिंह नागौर पुगग्यो अर अकबर सूं मदद मांगी।

पातसाह अकबर मारवाड़ री ई घरू फूट से फायदो उठावण सारू हुसैन कुली खान-ए-जहाँ ने एक मोटी फौज अर बीकानेर-आमेर रा राजावां साथे जोधपुर माथे चढ़ाई सारू भेजियो। संवत १ ६२१ (१ ५ ६४ ई.) में हसैन कुली जोधपुर रै किले माथे कब्जो कर लियो। राव चंद्रसेण ने मजबूरी में जोधपुर छोड़'र भाद्राजण रै पहाड़ां में सरण लेणी पड़ी। गढ़ हाथ सूं निकल गयो, पण राव रो हिवड़ी नी हारियो। उणां निर्वासिन स वे छह साल घणा ओखा काटियो, जन अर धन रो

भारी नुकसान झेलियो, पण तुर्क अकबर री अधीनता कदेई स्वीकार नी करी।

संवत १ ६२ ७ (नवंबर १ ५ ७ ०) में जद अकबर नागौर में मोटो दरबार लगायो, तद राव चंद्रसेण भी भाद्राजण सूं नागौर पुगिया।उण दरबार में फलौदी सूं उदयसिंह भी जोधपुर री आस ले'र आयोड़ो हो।दरबार में पुगते ही राव ने ओ अहसास हुयग्यो के मुगल दरबार सूं न्याय री उम्मीद राखणी बेमानी है, अर उदयसिंह री मुगलां सूं नजदीकी देख राव रो स्वाभिमान जाग गयो।राव बिना पातसाह सूं मिल्या ही दरबार छोड़'र पाछा भाद्राजण निकल गया, हालांकि आपरे बेटे रायसिंह ने ओ देखण सारू वठै ही छोड़ियो के आगै मुगलां री काई चाल है।

अकबर ने जद ठा पड़्यो के मारवाड़ रो ओ शेर हाथ नी आवणो, तद उण शाहबाज खान अर रायसिंह ने भारी फौज दे'र राव ने पकड़ण सारू रवाना किया।ईं घेराबंदी रै कारण राव ने सिवाणा अर पीपलोद रा पहाड़ां में छापामार जुद्ध छेड़णो पड़्यो।फौज अर संघर्ष ने जारी राखण सारू राव ने आपरो पोकरण रो किल्लो जैसलमेर रा रावल हरराज ने एक लाख फदिये में अडाणे राखणो पड़्यो।सिवाणा सूं भाद्राजण अर भाद्राजण सूं सारण रा पहाड़ां तांई राव चंद्रसेण रो ओ सफर साचै रजवट अर आजादी रो अमर इतिहास बणग्यो।सो राव मालदेव देवलोक हुआ पछे

चंद्रसेण पाट बैठो ।एयण चाकर सू चंद्रसेण रिसाणो ।सरे चाकर नास आगे राठौड़ जेतमल जैसावत रा डेरा हुता, तठ गया ।तब राव जेतमाल रा डेरा माय सू पकड़ाय मगाया जब जेतमाल आपरा प्रधान नू राव जी कन मेल गरज कराई ।हमरको गुणा मोनू बगसाइजे ।अर इण चाकर नू जीवा नहीं मारीजे ।राव जी कह्यो- जेतमल जी राजी हासी ज्यू करस्या ।आ कहि जेतमल रा प्रधान ने सीख दे लारा सू रात रा उण चाकर नु गरदन मरायो ।तिण सू जेतमाल घणा बुरो मानियो ।तद राठौड़ पृथ्वीराज कूपावत ने ओर ही जोधपुर राठौड़ हुता, तिणा सगला मिल एका किया ।कह्यो- "इण राव सू आपणो पूरी पड़सी नहीं"। आ विचार राव मालदे रा कुंवर रायमल नू, राम नू उदयसिंह नू कागद मेलिया ।थे वठा कामू करो छो ।तर राम तो बेलवा सू दौड़ सोजत रो बिगाड़ किया, अर रायमल दुनाड़ भू बिया ।उदयसिंह गां◌ाणी कन गांव लागठ मारी ।तर राम ने रायमल चंद्रसेण फौज मेल हटाया ।ने उदयसिंह रे वासत चंद्रसेण विडा चढ़ियो सो गांव लोहावट जावता भेड़ हुई ।तठ उदयसिंह रा हाथ री चंद्रसेण रे लागी ने रावल मेघराज रा हाथ री बरछी उदयसिंह रे सवारे लागी सो उदयसिंह जी घोडा सू पड़ गया ।सो साहाणी हद खींची आपरा घोड़े चढ़ उदयसिंह जी नू काढिया ने उदयसिंह जी रो इतरा साथ काम आया—

उदयसिंह जी नू काढिया ने उदयसिंह जी रो इतरा साथ काम आया—

- राठौड़ जोगो उदावत माहणोत।
- राठौड़ ईसरदास अमरावत मण्डलो।
- राठौड़ हींगला नेतावत पातो।
- राठौड़ कल्याणदास महसोत करमसोत।
- भाटी वेरमल माकरोत।
- भाटी जमल तिलोकसी परबतोत।
- भाटी साकर दुरजणसलोत केल्हण राजा उदयसिंह रो सालो।
- मोकल गगासलोत गागरियो राठौड़।
- राठौड़ खींवराज रायमलोत गागरियो राठौड़।
- राठौड़ पचायण टोहावत गागरिया राठौड़।
- खींची हदो केल्हणोत।
- साहाणी करमा जसिंह रा नादा रो नाई।
- राठौड़ गोपालदास पृथ्वीराजोत घावा पड़ियो।

राव चन्द्रसेण री तरफ सू काम आया— राठौड़ खम्भा भींवोत धरडकमत सू ठावत रो पातो।पछे राव जी जोधपुर पाछा आया। उदयसिंह फलोधी जाय कोटि सजियो।राव चंद्रसेन फेर फलोधी ऊपर चढ्यो सो जसवंत डूंगरसीयोत राठौड़ रावल

मेघराज राठौड़, जतमाल असवत राठौड़ पतो नागावत सानतरो मानसिंह राठौड़ पृथ्वीराज कूपावत ए ठाकुर चंद्रसेन ने पाछो ले आया।रामा नू उमरावा सिखाय ने अकबर पातसाह भेजिया।सो अकबर री फौजा ले आयो।सं० १६२० रा जेठ सुद १२^१ जोधपुर घेरो दियो।सो दिन १७ फौज रही।उमरावा विमटालो^२ कर ने राम ने सोजत दिलाई।कटक पाछा गया। राव राम सोजत जाय बैठो।केई दिन सोजत राज कियो।राव राम रो करायोडो सोजत रामलाव तलाव है।संवत् १६२० रा फागण वद १^३ फेर अकबर पातसाह री फौजा आई।तर राव चंद्रसेण हसनकुली सू बात कर पिरोजिया लाख च्यार पेसकसी रा कबूल कर फौजा पाछी फेरी।ओल में^४ सू पिया पंचोली भाणा अघावत।पंचोली भाणा तो नागौर रा कोट माह सू भाग ने उरो आयो।बाकी रा कैद में मूवा।

संवत् १६२१^५ में अकबर पातसाह री फौजा फेर आई। हसनकुली सरदार था।नायक दाऊद अजाबक्स रा बेटो फूल रो भाई चहुवाण मुसलमान गांव पावनठे सामो जाय दोढ़ हजार तोपची ले हसन कुली की फौज सू लड़ाई किवी।चालीस ४० भाई बंधा सू काम आयो।ने तीस सो (?) तरकस बंध हसन कुली रा मारिया।चैत सुद १२^६ हसन कुली जोधपुर घेरियो सोनगरो जसवंत मानसिंहोत राठौड़ पृथ्वीराज कूपावत, राठौड़ पतो नागावत राठौड़ जतमाल जैसावत राठौड़ चदो वीरमदेवोत

बीजो ही घणो साथ ले राव चंद्रसेण कसारा री पोल कनें भेड़ किवी।तुरका री फौज जोरे दीठी।

तर पाछा हठ ने गढ़ झालियो।वैसाख वद १० राम पोल निसरता पांच सात मारिया।तठ राव जी रा नायक खेतसी काम आयो। वसाख वद २ तुरकां हल्लो कियो।तठ दासा जी घावे पडिया। मुगल ५० मारिया।राव जी ने सगला ठाकुर छोड़ गढ़ में आय रह्या।वैसाख सुद ४ मुगलां हल्लो कियो।तठे गढ़ माहे घोड़ा २ गोला सूं मारिया।जेठ सुद ३ राणीसर तलाव रा काठ ऊपर मुगलां हल्लो कियो।तठ राठौड़ किशनदास दुरजणसलोत काम आयो।गढ़ माहे सचो तूठो।

पाणी नहीं^१।तर संवत् १६२२ रा मिगसर सुद १०^२ रात घड़ी आठ गया राव चंद्रसेण जोधपुर रो गढ छोड़िया।ने भाद्राजण गयो।हसनकुली गढ़ ऊपर चढ़ियो तर इतरा ठाकुर गढ़ रे हाथो दे काम आयो^३—

1. भाटी गागो नीबावत।
2. भाटी जमल आसावत।
3. भाटी आसो जोधावत।
4. राठौड़ वरल पातलावत।
5. रा० राणो वीरमोत।
6. रा० सूरो गागावत।

7. राठौड़ विजो वीरराजोत अडवा रो पोतरो।
8. इन्दो रासो जोगावत।
9. इन्दा रणधीर मेहेकावत।
10. इन्दो सूजो वरजागोत।
11. भाटी जागो आसावत।

गढ में अकबर पातसाह रो अमल हुवो।पछे जोधपुर बीकानेर राजा रायसिंह न पातसाह जी लिख दियो संवत् १६२ ९^४ रा वरस में।

राव चंद्रसेण भाद्राजण सू संवत् १६२५ रा फागुण सुद ५^५ हाडा सूरजन री बेटी परणीजण ने छड़ाईस^६ रिणथंभोर गया।न परणीजिया ने घोडा पनरे १५ पन्द्रह ने हाथी गहणा सूधो न रुपया १०५000/- एक लाख पाच हजार दायजो दियो ने पाछा पधारिया।ने मुलक में घणा बडा कजिया^७ किया।ने

.. में बीकानेर राव रायसिंघजी रो साथ रो जावतो हो सो सारा नास ने गढ़ में चढ़ गया।ने चंद्रसेणजी पाछा भाद्राजूण गया।

पातसाह अकबर राव चंद्रसेण ने घेरण सारू शाहबाज खान अर मुसाहिब जलाल खान, हुसैन खान जईड़ा नामी सिपहसालारां ने साढे तीन हजार सूं बेसी फौज दे'र रवाना किया।जलाल खान जो मोटे राजा उदयसिंह रो खास मानितो

हो, उणरो मुख्य लक्ष्य राव ने जीवतो पकड़णो अर सिवाणा रै गढ़ माथे पातसाही अमल करनो हो।राव चंद्रसेण सिवाणा रा अभेद्य दुर्ग अर पीपलोद रा ऊंच-ऊंच पहाड़ां ने आपरो ठिकाणो बणायो।पहाड़ां री ओट सूं राव ऐड़ी छापामार लड़ाई छेड़ी के दिल्ली री फौज रा पग धूजण लागा।

।गीत देवड़ा रा जुद्ध रो ।

मरुधर सूरज चंद्रसेण, सिवाणै सिरमोड़।
मेघराज संग मेल करि, दळी मुगळ मरोड़।
हुसैण खान फौजां हणै, देवड़ा हुयौ घमसाण।
रजवट री रीत राखिया, साचा क्षत्रिय जाण।
अकबर हुकम ऊठिया, चढ़ि फौजां अपार।
शाहबाज संग रायसिंह, करबा नूं संहार।

\

जलाल खान, हुसैन खान सिवाणा कानी बढ़ियो तद सिवाणा सूं कुछ मील दूर 'देवड़ा' रै मैदान में भिड़ंत हुई।पहाड़ी रास्तों में घिरे हुसैन खान ने लागा के उणरी भारी फौज जीत जासी, पण राव रा जुझार वीरां मौत सूं होड़ लगाय दी।

देवड़ा रै उण घमासाण में रावल मेघराज रा घणा ही हेताळू अर खासमखास साथी काम आया।गोयंद बोगसा दुसमण री फौजां

ने वीरता थकां वीरगति ने पाया। जीवो भाटी अर बरछो खींची री वीरता देख मुगलां रा पग पाछा पड़ गया। दास नारू तो उण बखत साक्षात काल बणग्या अर राव री ढाल बण'र अंतिम सांस तक जुझिया। हेमो चारण अर रतनो गागावत री वाणी अर तलवार दोयूं साथे चालती ही, जो वीरां में जोश भरता थकां मैदाम में सो गया। धांधल बीजो, जमल आसावत अर खींवराज गागरियो ऐड़ा हाथ दिखाया के हुसैन खान रो गरब चूर-चूर हुयग्यो। आखिर में हुसैन खान उणीं रणखेत में मारियो गयो अर उणरी बची-कुची फौज भाग छूटी। देवड़ा री माटी आज भी उणां वीरां रा बलिदान री गवाही देवे है, जठै राव चंद्रसेण अर रावल मेघराज आपरे स्वाभिमान सारू हर संकट झेलियो पण हार नी मानी।

देवड़ा रै जुद्ध में हुसैन खान ने धूळ चटावण पछे भी राव चंद्रसेण रो संघर्ष थमियो नी। पातसाही फौजां रा घेरा और कड़ा हुवण लागा, तद राव सिवाणा सूं निकल'र भाद्राजण कानी पधारिया।

भाद्राजण री पहाड़ियां में राव कुछ समय तांई डट्या, जठै उणां आपरी फौज ने फेर सूं भेळी करी। पण मुगलां री फौजां उण पहाड़ां ने भी चहुंओर सूं घेर लियो। राव जांणता हा के सीधा जुद्ध सूं बेसी जरूरी है आपरी ताकत ने बचाय राखणी, ताकी

स्वाभिमान री आ जोत बुझै नी।भाद्राजण में भी मुगलां सूं कई छोटी-मोटी झड़पां हुई, जठै रावल मेघराज रा वीर साथी साये री ज्यूं राव रै साथे रैया।

भाद्राजण सूं निकल'र राव रो मन फेर सूं आपरे उण गढ़ कानी गयो जो उणां अडाणे (गिरवी) राखियो हो– पोकरण।पोकरण रो किल्लो जैसलमेर रा रावल हरराज रै कबे में हो।राव चंद्रसेण ने लागो के सिवाणा अर भाद्राजण माथे मुगलां रो जोर बढ़ रयो है, तद पोकरण सूं रसद अर मदद मिलणी जरूरी है।

पछे राव जी रे राजपूत दास पातलोत गांव महली कला खा सू भेड़ किवी।जठ मुगल घणा मारिया।

पोहकरण राव चंद्रसेण रा साथ था।भाटिया गाया लिवी।तरे बाहर चड़िया था सो इतरा काम आया–

१. चहुंआण रामो।२. पंचोली सुराज।३. राठौड़ राजधर।४. राठौड़ रतनसी।५. पड़िहार।६. सोहड़।

संवत् १ ६३१ पातसाह जी जाणपुर बीकानेर रो धणी रायसिंह ने लिख दियो।सो वरत दोड़ेय रह्यो।बीकानेर रो दलपत गढ़

ऊपर काम गेल रा गोळा सूं पड़िया, सो मूओ तो नहीं, पण अधगळा पूरो हुवो।

संवत् १ ६३२ रा कती में जैसलमेर रा रावल हरराज आदमी सात हजार ७ ००० दे पोहकरण रो कोट घेरियो। रावल री फौज में कुंवर भीम भाटी बससीह मालदेवोत मुख्यार था पोहकरण रा कोट में राव चंद्रसेण रो साथ थो। तिण में मुखरार पचासो भरा थो। मास च्यार घेरो रह्यो। राव चंद्रसेण ने रावल हरराज कहिण लाग दिया। ने कह्यो लाख फदिया च्यार जोधपुर हुवे तर थे म्हाने उथार दीजो। म्हे थारो पोहकरण थाने पाछो परो देसा। लाख फदिया माहे आधो अडाणो है। राव विदा में हुतो सा जाणियो पराई सगती छूटी। पोहकरण राखणो वातो नहीं। तुरत लाख फदिया घावे थि सो उरद लीजे। जोधपुर ऊपर जाय वेसां कुरे माटिम। पण म्हारी पोहकरण रहसी नहीं। इरी साख। धा विचार मागळियो भोज पोहकरण मेलियो। बेगाणी— रावल हरराज ने कोट सुंप दीयो। सैंतीस हजार फदिया रावल हरराज मागळिये भोज नूं सुंप दिया। तिण माह सूं ५ हजार फदिया तो भोजराज आप राखिया ने बीस हजार फदिया कोट में रावरी रा रजपूत था तिणा ने बांट दिया। ने कोट माहे धन एत सोर सोसो बगेरू माल थो तिण रा वरवे १ २००० फदिया राव जी ने मेलिया फागण वद १ ४ रात पोहर गया। भाटी कोट में पेठा। मागळियो भोजराज

रावल हरराज रा साथ सूं पोहकरण देय राव चंद्रसेण कनै आयो। संवत् १ ६३२ पातसाह री फौज सिवाणो

गई बीकानेर रो राव रायसिंघ ही पातसाही फौज साथे थो राव चंद्रसेण पीपलोद रा भाखरा गयो व भाखर में राठौड़ पातो मणोत रह्या सा पिरथक दिन लड़िया पछे अकबर पातसाह रा उमराव सहेबाज खां सूं बात कर सिवाणे रो गढ़ सोंप थतो राव जी कन आयो रावजी पीपलोद रा भाखरं ा गया भाखरा दगा किया पछे मगरा में कानून आय रह्या तिण दिनां राठौड़ रतनसिंघ खींवा ऊगावत रो बेटो तुरकां सू मिल न भाखरसाई रह्या था सा इणां न चंद्रसेण जी कडावो– राव सूना कर वसा मगरे राय स गा कन आया तर इणां कडावो–

'हमार मास च्यार ४ ता मासू था कनै धरीज नहीं' तर राव जी बुरो मानियो मैं ता दुख फोड़ा इतरा उदास्ता रा राह करने देसा सो राठौड़ कल्याण मयमालदासा, नरहरदास राम री वसी भाखरसाई थी तिण ऊपर राव चंद्रसेण जी दिड़ पड़िया बी भाखरसाई मारी तिण सू राजपूत ऊदावत उदास हुवा ने उदैराज सम जोधपुर रा बाणिया रय विहुक मारिया दुरा दिया तरे सूकड़, सातलवा सुहता अडताली म मुकना सू मिलिया न बीकानेरियां ने मे र्तिया धारे मुगला भेला था फौज न ऊगावत जोधपुर रा बाणिया री मारफत मुख्या सू एकवेट दियी न सारा

भेला होय ने मुगलां री फौज रावजी ऊपर लाया।सो वे हुइ।ने राठौड़ ठाकुरसी रिणधीरौत ने और साथ काम आया ने गूडो लूटायो।देणसारी तिलोकसी काम आयो।ने इण समै रावत पकाहण मर धणा हीडा किया।पण कारणुआ सू पहाड़ गया।पहाड़ का सिरोही।वरस दोडेक सिरोही धरती में रह्या।पण कलोला बगरह कमी ता सिरोही धरती में राणी ने चंद्रसेण जी डूंगरपुर गया।रावल आसकरण कन जो तुरकां न राव रायसिंघ जी ने खबर हुई चंद्रसेणजी री वसी सिरोही धरती माहे एकली छ।सो ध धोंक करने गया स पहना खबर हुई तिणसू राजलोक बगरह तो डागरा चढ़िया ने राठौड़ फलो नथावत राठौड़ भाणजीनाम देईदानोत आपाकल मगरे ने स्वार हुआ।तर पीरदाई जोगई राव मालदे जी री राणिया कह्यो जे मुवा तो म्हाने मोल पड़सी।सो इसी वहुत सू ठाकुर भागर पड़िया।फौज आई सो बसो रे धमाधम लूटियो।पण राजलोक बगरह सारा जणा डूंगरपुर री धरती में गया।

रावत भाणा रो कह्यो सम्मल जाय राणा परताप सू मिलियो ने च्यार हजार ममुनी देशी दियी।राव जी नू डूंगरपुर मांय सू परा काढ़न षडयंत्र समझायो।तर गदघर गांव राता जी आपरा साथ इन पाखड़ का विदा दिया सा शकल काम बगो बार काढ़ियो। पारसपीवाई राव जी नू कडादियो– अठेर कहा माणस मळजो।

सा मासू स चीमरे।अहाणे सार मयळ है।तर राव चंद्रसेण जी सताणी गुणगाण सू मनिया।

राज बेरा आप मेला हुई जो।पछ राव चंद्रसेण जी पड़िया हो डूंगरपुर आया, सो रावल कोट छोड़ परा निसरियो न उने दरवाजा में हुए ने राव चंद्रसेण भी कोट में गया।मास कयो रावल का निसरियो न पले दरवान सहसमल राणा जी रो साथ जमे आप सामो।सा राणा जी रे साथ सहसमल नूं पूछियो– तू कह तो रावल को कोट छोड़न गया, तो ध दबामा मांय किए रा बाने।तर खबर मगाई सो खबर आई।रावल निसरियो न राव चंद्रसेण है।तर ध ऊठ होय उतरिया न राव जी ने कडादिया– 'राज डूंगरपुर छोड़ो।रावल निसरियो है म्हाने राणा जी हुकम छ सहसमल नूं गादी वेसाणो'।तर राव जी कडादिया हूं तो हवे आया बिंदु तीसरा धार आयो जोईजे तो आवे।तर वणा पलो ही कडादियो– 'भैरूसा सहसमल ने गादी वेसाणा ने च्यार हजार ममुनी भी म्हाने कही है– सा मिल जाय पछ बने दे– जाहओ जिह्व वीजो''।विण राव जी डूंगरपुर छाडियो नहीं।रावल भाणा नूं खबर हुई, राव जी महता माहे छ।तर राव जी नू कडादियो– 'राज म्हे जाणियो ध नहीं पधारो वे राणा जी सूं म्हाने तोडिया नहीं जावे।तर म्हे निसरिया।ने राणा जी रे साथ राणा जी नू खबर मेलि रावल निसरियो विण राव चंद्रसेण नहीं नीसरे।तर राणा जी नू खबर मेलि रावल माय है– ता ध उरा आवजो'।पछ

राणा जी साथ न सहसमल परा गया।रावल भाणा ने पोहचावतीबाई बल महता म आया ने राव जी ने वडा जस धायो।पछ पातसाही फौज राणा ऊपर आई राणा जी था वायद छूटी कटक आया था।तर राव चंद्रसेण जी डूंगरपुर छोड़ ने मारवाड गया।उठ रावत परताप हीडा किया।मास तीन क्या च्यार मोहरा साथण ने दिया।कोटडे राव राव जी आय रह्या, सो वरस १ एक तथा १ १/२ दोड़ रह्या।उठ राणा जी आया।राणा जी नू राव जी मिजमानी दियी।मारवाड में राव कला ने माडल कूर हुवो।सोजत पातसाह जालने किवी, ने सईदा रो थाणो राखियो।नार राव राम कढो मर मुवा तरे राठौड़ सादूल महणोत कूपावत न आसकरण देवीदानोत बतावत बगरह सारा सरदारा मिलन विचार किया– 'राव चंद्रसेण जी नू बुलावा सो धरती दवे'।तर चंद्रसेण जी ने कागद मेलिया।तर चंद्रसेण जी आया न राव सरणाह (सारण) वासराह री थाणा थी सो काट न अमल कियो।संवत् १ ६३ ६ रा सावण वद १ १ इण वारह न राव चंद्रसेण सोजत ही उरी लिखी।

संवत् १ ६३ ६ रा सावण वद १ १ माहे सरणाह में तुरकां रौ थाणो थो।सो मार अमल कियो।तठ इतरा काम आया– १ ऊहड़ जगत फतहसिंघोत।२ ऊहड़ सहमल जसवंतोत।३. राठौड़ किशनदास पापावत।४. रा. रायसिंह भांमीदानोत।५. राठौड़ करमसी मालावत।६. रा. डूंगरसी मालावत।७ . रा. सांगा करमलोत।८.

सांखला कूपा।९. भाटी भगवान वीरमदेवोत।१०. भाटी सुल्तान उदावत।११. दूचो बलो।१२. भाटी महेसदास।१३. रा. कलादास जगमालत।१४. रा. जसवंत जगमालत।१५. मुहणोत अचलो भूजावत।१६. देवड़ा बीदा जी रा राजपूत २ साथण।१७. अखराज।

राजपूत ८० घायल हुवा, राव जी सगली विगय सोजत का सारण री नाल में आया।अठे रहा न कितरा दिन पाछे राठौड़ ठाकुर सको आया ने उणै सिणियारी र भाखर सिणियारी दी साग में ठह राव जी आय रह्या।सो राठौड़ बैरसल्ल उदैसिंह नूं पाखत दूजोड़ माये दुजाणी बैरसल्ल गहा आव।तर बैरसल्ल ऊपर राव चढ़िया सो कूहौड़ सू नेड़ा आया सो बैरसल्ल रा भाई राठौड़ सको आया वही आव।कहिण कहै मारा पट दुवै न कउर कहै म्हारो मळवो असमादियो।तर राव जी दीठो राठौड़ तो बैरसल्ल ऊपर नहीं धावे तर आसकरण देवीदानोत राव जी नूं कह्यो– भो कोय नहीं थारे बैरसल्ल मारियो जोईजे ता वहा जिऊ मार जिण थारो रजपूत है।मे पाछा पधारो हूं बैरसल्ल सूं न थाईब।न बैरसल्ल नूं कह्यो– हूं मली जांणे मन्नू काई नहीं मारे।हूं तन्नू मारीस।तू नहीं तो उरो आव।पण राव जी पाछा पधारिया ने बैरसल्ल नूं ही घालियो।पछे बैरसल्ल कह्यो– हूं राव जी थारे कोह मोंनू कमाण नहीं आव।रावजी मार अरामे ता थारो जीव रह्यो हुवै।पछे रावजी नूं मिजमानी दियी।तठ राव जी जीमण

वसी में आया न तुरत देवलोक हुवा।सा जहर हुवा कह कहै।राव सरणा रे अणोरानी गांव सविनाथ है तिण रा मगरा री नाल में अन्त्येष्टि भी देवलोक हुआ।इत्ता र वख रा अजमेरा म भिलाप बण रहै है सो चंद्रसेणोत ओपा खानै है।राव राम र सब वसा रा सामान...

जोधा मारवा में है, ने मारवाड़ में गोड़वाड़ रा परगना में गांव पाव छै, ने सारण व खाखरो ठिकानो है।संवत् १ ६३ ७ रा माह सुद ७ राव सिणियारी गढ़ में राव चंद्रसेण काल किया।राव चंद्रसेण रा राजलोक, कुंवरा री विगत--

१ . बही बहू चहुवाण कल्याणदे हमीर खीवावत री बेटी राव जी जीवता मूई तिण रो बेटो १ उग्रसेण संवत् १ ६१ ६ रा भादवा वद १४ जनमियो।वळी १ जाववंती देवड़ा बीजाजी ने परणाई थी सो पोता जी साथे सती।

२. बहू कछवाही सुहागदे नकी पीहर गांव फागी, कछवाहा बीरा री बेटी तिण रा बेटा १ रायसिंह संवत् १ ६१४ जनमिया कटी। आ सुकुवर राजा मानसिंह ने परणाई।

३. भटियाणी कनवरादे सासरा रो नाम सोभगदे जैसलमेर रा रावल हरराज री बेटी, राव जी साथे सती तिण र बेटी १

करमेतीबाई बिगा माहे भाद्राजूण रहता तठे राणा उदैसिंह नूं परणाई।

४. सीसोदणी चदावत, सासरा रो नाम सूरजदे राणा उदैसिंह री बेटी संवत् १ ६१ ६ रा वसाख वद १ ३ चित्तोड़ जाय परणिया। संवत् १ ६४१ मथुरा जी काम कियो, संवत् १ ६ ७ ० मथुरा जी में चलिया तिणा र बेटा १ आसकरण संवत् १ ६२ ७ रा सावण वद १ जनमिया।

५. बहू कछवाही हुकमदे जोगी कछवाहा री बेटी।

७ . बहू भटियाणी जसोदा, सासरा रा नाव हकमदे कछवाड़ राम वणवीरौत री बेटी राजा उदैसिंह जी री दिया गांव योतातळो पटे थी तठे मुई संवत् १ ६ ९ ७ रा पोष में ८. बहू भटियाणी प्रमलदे बीठूपुरी राव डूंगरसी री बेटी संवत् १ ६८३ में मुई।९. बहू भटियाणी जगीवाबाई महाराजाहीदास री बेटी राव जी साथे सती। १ 0. बहू सोढ़ी मेघा उमरकोट री राव जी साथ सती। १ १ . बहू चौहान पुरवणी राव जी साथ सती।

२. धोलणराव १ . दूमभाता राव जी साथे सती।२. गुरताणी संवत् १ ७ ०१ रा आसोज वद ५ गढ़ ऊपर मुई।

४. बाहरली धोलण: १ . पदमा।२. रामकुंवरी।३. हीरा।४. रुकमणी।

पछे राठौड़ जगमाल ऊदावत नूं धायो।जगमाल कितराक पाथ रा घोड़ा राव चंद्रसेण ने बिदा में देन घर में थाम्यो।

राव चंद्रसेण देवलोक हुवो तर पाटवी बेटा रायसिंह हा अखबर पातसाह कनै थो।ने रायसिंह सू छोटा उग्रसेण कूं द्यो थो।अ आसकरण न चंद्रसेण र टीक बताावियो।गाव सारण में आसकरण देवीदासत राम रतनसीदासत सादूल महणोत भोजराज देवीदासत इणां ठाकुरां आसकरण न टीको दियो।राव चंद्रसेण रो मरण सुण उग्रसेण भाव, मंडत तुरक मां रह्या सू मिल्या।तर आसकरण रा उमराव परधानां विचारियो उग्रसेण माठियाद छ।तुरकां सू मिलिया छ।धरती माहे तुरक धाळसी। किया होसी? आ विचार आधी धरती दगा कर उग्रसेण न दाय सारण धारियो।संवत् १ ६३८ रा जेठ सुद २ गांव सारण में उग्रसेण ने...

आसकरण मठी में घोडा रमता था।सो उग्रसेण आय कर राव आसकरण ने कटारी सूं मारियो।तठ राव आसकरण रो राजपूत राठौड़ सेखो सांकरोत ऊभा था तिण उग्रसेण रा हाथ माहे सूं

बाहाज कटारी त्यास उग्रसेण नूं मारियो।उग्रसेण रो जीव तो पेहलां निसरियो, ने आसकरण रो जीव पछै साचो पछै निसरियो।राठौड़ महुरावण अचरज जियतौआयत रा आसकरण जी नू मारियो, तिण बखत मठी सूं नीचो उतर ने भाग गया थो।सो पाछो आयो तरे राठौड़ सादूल महणोत मख्खरी रूपी वाल कह रह्या 'दे कड़े था' महुरावण कह्या— हाजर न थो आ वह न घोड़ा ऊपर चढ़ न बरछी मारी बरछीय ऊभी विमाडी थी तिणा ऊपर कूद पड़िव ने मूओ।

६. बहू देवड़ी अहसराजदे राव मान री बेटी।संवत् १ ६२४ रा सावण वद १ २ सिरोही जाय परणिया था।संवत् १ ६५ ९ मथुरा जी में राज कयो तिणा र बेटिया २ थी सो उदैसिंह जी परणाई।
१ . बाई समतावती कछवाहा गोरधन राजा आसकरण न परणाई।२. बाई राजकुंवर कछवाहा सबलसिंह राजा मानसिंह रा बेटा ने परणाई थी सो सती।

मारवाड़ रा सूरज राव चंद्रसेण जी रै जीवन सूं जुड़ी ओ घटना रजवट री साची मर्यादा अर त्याग री साख भरे।राव जी री बही (राणी) कल्याणदे, जो चहुवाण हमीर खीवावत री बेटी ही, उणां रो हिवड़ो और पतिव्रत धर्म ऐड़ो अडिग हो के वे राव जी रै

जीवता थकां ही 'मूई' (अर्थात् संसारिक मोह त्याग दियो या विशेष संलेखना/तप सूं देह त्याग दियो) ।इणीं राणी कल्याणदे री कूख सूं सं० १ ६१ ६ रा भादवा वद १४ ने कंवर उग्रसेण रो जनम हुयो, जो राव जी रा पाटवी बेटा हा।

इणीं संघर्ष रा दिनां में दूजी एक घटना देवड़ा कबीले सूं जुड़ी है। जाववंती देवड़ी, जो देवड़ा बीजाजी री बेटी ही अर राव चंद्रसेण जी री परिवारजन (बहू या राणी रूप में) ही, उणां रो त्याग भी इतिहास में अमर है।जद राव जी रा पोता (पोता जी) रणखेत में या अकाल मृत्यु ने प्राप्त हुया, तद आ वीर नारी 'पोता जी' साथे सती हुय'र आपरे कुल री रीत निभाई।

राव चंद्रसेण जी री बहू (राणी) कछवाही सुहागदे जी, जो कछवाहा बीरा री पुत्री ही अर जिणां रो पीहर गांव फागी हो, उणां रो मारवाड़ अर आमेर रै संबंधां में मोटो नाम है।राणी सुहागदे री कूख सूं संवत १ ६१४ में कंवर रायसिंह रो जनम हुयो।ओ वही बखत हो जद मारवाड़ में राव मालदेव जी रो राज हो अर राव चंद्रसेण जी युवराज हा।

इणीं वृत्तांत में आगे आ बात भी आवै है के उणां री पुत्री सुकुंवर (सुखकुंवर) रो ब्याव आमेर रा राजा मानसिंह जी साथे हुयो।ओ संबंध उण बखत री राजनीति अर रजवाड़ों रै आपसी मेल-जोल रो मोटो प्रमाण है।राव चंद्रसेण जी रो संघर्ष जठै एक पासे

मुगलां सूं हो, वठै ही उणां रा पारिवारिक संबंध राजस्थान रा दूजा मोटा राजघराणां साथे भी जुड़्योड़ा हा।कंवर रायसिंह रो जन्म: सुहागदे जी री कूख सूं संवत १ ६१४ में राव चंद्रसेन जी रा पुत्र कंवर रायसिंह रो जन्म हुयो।ओ उण बखत री वात है जद मारवाड़ में राव मालदेव जी रो राज हो।रायसिंह आगे जा'र राव चंद्रसेन जी रै संघर्षमय जीवन में साथ रैया, जद्यपि बाद में राजनैतिक स्थितियां बदलती रही।

पारिवारिक संबंध अर सुकुंवर बाई: सुहागदे जी री पुत्री बाई सुकुंवर (जिणां ने सुखकुंवर भी कह्यो जावे है) रो ब्याव आमेर रा प्रतापी राजा मानसिंह जी साथे हुयो।आ ऐतिहासिक दृष्टि सूं घणी मोटी वात है, क्यूंके एक पासे राव चंद्रसेन मुगलां सूं लोहा ले रैया हा, तद दूसरी पासे उणां रा पारिवारिक संबंध आमेर जईड़ा मोटा राजघराणां सूं जुड़्योड़ा हा।

त्याग अर मर्यादा: राव चंद्रसेन जी जद जोधपुर छोड़'र भाद्राजण अर सिवाणा रै पहाड़ां में मुगलां सूं छापामार जुद्ध लड़ रैया हा, तद राणी सुहागदे जी भी उणां रा संकट रा साथण रैया। ख्यात रा लेखां सूं ठा पड़ै है के मारवाड़ री राणियां कदेई महलां रा सुख नी जोया, जठै राव जी रो पगां रो पसीनो पड़्यो, वठै ही उणां राणियां आपरो स्वाभिमान राखियो।

जैसलमेर रा रावल हरराज री पुत्री भटियाणी कनवरादे रो ब्याव मारवाड़ रा प्रतापी राव चंद्रसेण जी साथे हुयो।राणीजी रो सासरै में नाम 'सोभगदे' राखियो गयो।राणी सोभगदे साचै अर्थां में पतिव्रता नारी ही।जद राव चंद्रसेण जी संवत १ ६३ ७ में सारण रा पहाड़ां में देवलोक हुया, तद राणी सोभगदे आपरे पति री देह साथे सती हुय'र आपरो सुहाग अमर कर लियो।ओ बलिदान उण बखत रै रजवट री साची मर्यादा रो प्रतीक है।

राणी सोभगदे री कूख सूं एक पुत्री रो जनम हुयो, जिणां रो नाम करमेतीबाई हो।करमेतीबाई रा जनम और बचपन रा दिन मारवाड़ रै संघर्ष रा दिन हा।जद राव चंद्रसेण जी मुगलां सूं लोहा लेवता थकां भाद्राजण में बिराजता हा, उण बखत बाई करमेतीबाई भी वठै ही रहता।आगे जा'र करमेतीबाई रो ब्याव मेवाड़ रा राणा उदयसिंह (महाराणा प्रताप रा पिता) साथे हुयो।

ओ संबंध ऐतिहासिक दृष्टि सूं घणो मोटो है, क्यूंके ई नातै सूं मारवाड़, जैसलमेर अर मेवाड़– राजस्थान रा तीन मोंटा राजघराणां आपस में नातैदारी सूं जुड़्या।राव चंद्रसेण जी री पुत्री मेवाड़ री राणी बणी, जो उण बखत मुगलां रै खिलाफ लड़ण वाली शक्तियां री आपसी एकता ने दरसावे है।भाद्राजण री गलियां अर महलां आज भी बाई करमेतीबाई अर राव चंद्रसेण जी रै उण संघर्षमय दिनां री साख भरे है।

मेवाड़ रा प्रतापी राणा उदयसिंह री पुत्री और महाराणा प्रताप री बहिन राणी सूरजदे रो ब्याव मारवाड़ रा प्रतापी राव चंद्रसेण जी साथे संवत १ ६१ ६ रा वैसाख वद १ ३ ने हुयो।राव चंद्रसेण जी आपरी बरात ले'र चित्तौड़गढ़ पधारिया, जठै ओ ऐतिहासिक ब्याव गढ़ रे महलां में पूर्ण हुयो।आ दो प्रतापी रियासतां री एकता रो मोटो प्रमाण हो।

राणी सूरजदे री कूख सूं संवत १ ६२ ७ रा सावण वद १ ने कंवर आसकरण रो जनम हुयो।ओ उण बखत री वात है जद मारवाड़ माथे मुगलां रो संकट घणो मोटो हो और राव चंद्रसेण पहाड़ां में छापामार जुद्ध लड़ रैया हा।आसकरण जी रो जनम संघर्ष रा दिनां में हुयो।

राणी सूरजदे जी रा अंतिम दिनां रो वृत्तांत मथुरा जी सूं जुड़्योड़ो है।संवत १ ६४१ में उणां मथुरा जी में 'काम कियो' (अर्थात् कोई मोटो धरम रो काज या विशेष सेवा करी) और संवत १ ६ ७ ० में उणां मथुरा जी री पवित्र धरती माथे ही देह त्याग करी (चलिया)।राणी सूरजदे जी रो जीवन मेवाड़ अर मारवाड़ रै बिचै प्रेम और मर्यादा रो प्रतीक बणियो रयो।

सिरोही रा राव मान री पुत्री बाई अहसराजदे रो ब्याव मारवाड़ रा प्रतापी राव चंद्रसेण जी साथे संवत १ ६२४ रा सावण वद १ २ ने हुयो।राव चंद्रसेण जी आपरी फौज अर लाव-लस्कर साथे सिरोही पधारिया, जठै ओ ब्याव संपन्न हुयो।राणी अहसराजदे आपरो अंतिम समय मथुरा जी री पवित्र नगरी में बितायो अर संवत १ ६५ ९ में वठै ही 'राज कयो' (अर्थात् देह त्याग करी)।

राणी अहसराजदे री कूख सूं दो पुत्रियां (बेटियां) हुई, जिणां रो ब्याव मोटे राजा उदयसिंह जी आपरी देखरेख में कछवाहा राजघराणां में करवाया:

1. बाई समतावती: उणां रो ब्याव कछवाहा राजा आसकरण रा पुत्र गोरधन साथे हुयो।ओ संबंध मारवाड़ अर आमेर (कछवाहा) वंश रै बिचै दोस्ती अर नाता-रिश्ता ने और मजबूत करियो।
2. बाई राजकुंवर: उणां रो ब्याव आमेर रा प्रतापी राजा मानसिंह जी रा बेटा सबलसिंह साथे हुयो।बाई राजकुंवर रै जीवन रो मोटो वृत्तांत ओ है के वे आपरे पति रै शांत हुवण पछे सती हुय’र आपरे कुल री रीत अर रजवट रो धरम निभाइयो।

3. मारवाड़ रा सूरज राव चंद्रसेण राठौड़ अर उणां रा परिवार रो ओ वृत्तांत मरुधर री माटी रा साचा स्वाभिमान री अमर कहाणी है।संवत १६१९ में राव मालदेव जी रै देवलोक हुया पछे जद चंद्रसेण जी जोधपुर री गादी माथे बिराज्या, तद मारवाड़ में भाईयां रै बिचै कजिया री नीं पड़गी।बड़ा भाई रामसिंह अर उदयसिंह आपरो हक दरकिनार हुवण सूं रिसाय'र मुगलां री सरण में ग्या, जठै सूं मारवाड़ माथे संकटां रा बादल घिरावण लागा।राव चंद्रसेण आपरे स्वाभिमान सारू लोहावट अर नाडोल रै मैदाम में भाईयां सूं जुझिया, पण जद अकबर री फौज जोधपुर माथे कब्जो कर लियो, तद राव ने भाद्राजण अर सिवाणा रा पहाड़ां में सरण लेणी पड़ी।उण बखत रावल मेघराज जईड़ा वीर साथी राव री ढाल बण'र खड़ा रैया।देवड़ा रै भीषण युद्ध में मुसाहिब हुसैन खान री फौज ने धूळ चटावण सारू गोयंद बोगसा, जीवो भाटी, बरछो खींची, दास नारू अर हेमो चारण जईड़ा वीरां आपरे रकत सूं विजय रो तिलक कर्यो।उण संघर्ष रा दिनां में राव री माली हालत घणी ओखी हुयगी, तांई उणां पोकरण रो किल्लो जैसलमेर रा रावल हरराज ने एक लाख फदिये में अडाणे राख दियो, पण तुर्क अकबर री अधीनता कदेई स्वीकार नी करी।

4. राव चंद्रसेण जी रा कौटुंबिक संबंध भी उण बखत री राजपूती मर्यादा अर त्याग रा साचा प्रमाण हा। उणां री राणी चहुवाण कल्याणदे साचै अर्थां में पतिव्रता ही, जो राव जी रै जीवता थकां ही संसारिक मोह त्याग दियो। इणीं राणी री कूख सूं संवत १६१६ में पाटवी कंवर उग्रसेण रो जनम हुयो। उणीं भांत जैसलमेर री राजकुमारी भटियाणी कनवरादे, जिणां ने सोभगदे कह्यो जावतो, राव जी रै शांत हुवण पछे उणां री देह साथे सती हुय'र आपरो सुहाग अमर कर लियो। उणां री पुत्री करमेतीबाई रो ब्याव मेवाड़ रा राणा उदयसिंह साथे हुयो, जो मारवाड़, मेवाड़ अर जैसलमेर री आपसी एकता रो मोटो नातो हो। एक और मोटो नातो मेवाड़ सूं ही, जद संवत १६१६ में राव चंद्रसेण जी चित्तौड़ जाय'र राणा उदयसिंह री पुत्री सीसोदणी सूरजदे सूं परणिया। उणां री कूख सूं संवत १६२७ रा सावण वद १ ने कंवर आसकरण रो जनम हुयो। आसकरण जी रो ननिहाल मेवाड़ रो प्रतापी सिसौदिया वंश हो, जिण कारण उणां रै रगत में 'सिर कट जावै पण झुकणो नी' रो संस्कार हो। आसकरण जी रो बचपन महलां में नी, बल्कि सिवाणा अर पीपलोद री गुफावां में बीतियो, जठै राणी सूरजदे उणां ने कड़ाके रा संकटां में भी रजवट री रीत सिखाई।

5. राव री दूजी राणी कछवाही सुहागदे, जो गांव कागी रा कछवाहा बीरा री बेटी ही, उणां रा बेटा रायसिंह संवत १६१४ में जनमिया। इणीं राणी री बेटी सुकुंवर रो ब्याव आमेर रा राजा मानसिंह साथे हुयो। इण भांत सिरोही रा राव मान री बेटी अहसराजदे सूं भी राव रो नातो जुड़्यो, जिणां री बेटियां बाई समतावती अर बाई राजकुंवर रो ब्याव आगे जा'र कछवाहा कुल में हुयो। बाई राजकुंवर आपरे सुहाग सारू सती हुई। राव चंद्रसेण जी रा बेटा— उग्रसेण, रायसिंह अर आसकरण— महलां रा भोग छोड़'र पिता रै संघर्ष रा साये बण'र रैया। भाद्राजण सूं पोकरण अर पोकरण सूं सारण रा पहाड़ां तांई रो ओ सफर सिर्फ एक राजा रो नी हो, बल्कि ओ एक पूरा परिवार अर उणां रे निष्ठावान साथियां रो हो, जिणां मारवाड़ री आन-बान अर सान सारू हर संकट झेलियो पण कदेई गुलामी रो कलंक आपरे माथे नी लागण दियो।

सेखा सांकरोत रो गीत

अठै सेखा सांकरोत री बहादुरी माथै डिंगळ गीत दीधौ गयौ है:

ग्रह न सके ग्रह उग्रहे ग्रहिया, दसाव चव दूटद दुवे।सेखडा साम
सभाह सरीखो, हेक कड़े जो बीच हुवे ॥1॥

धपड गिले किम मुनख भावणा, कह किरखपत सोम गया।**
(एकाध पत जिसा उदावत), हेक हुवे जो खंडग हुवा ॥2॥*

राह मिले किम कह गोय रवि, मुहे असुर ग्रह तेम मुहे।सुमट
बिया रिखमाल सरीखो, जुडन हार जो इसो जुडे ॥3॥

समीहर कहै सपख्या सूरज, अधड करै इण ग्रहण बनेम।धूर
कलह सिखर सरीखा, आया तिह न मिलियो एक ॥4॥

अणदगिया तुरी ऊजला असमर, पावर रहण न दियो पीत।सारा
हींदूकार तण सिर, पातल ने चंद्रसेण प्रनीत ॥1॥

तुरिये विगस खत्रीवट विजड़े, असपत दल रहिया अणिण।
कत्तक विना कु भेला कुतोघर, बाध कुतोघर कसक विण ॥2॥

एवग अगद सुजसा पड़ियाळग, खरहड़ तणी न लागी येह।राण
उदैसिंह तणो निरेहण, रायामल तणो अणारेह ॥3॥

आसकरण उग्रसेण दोनूं इण तरह आपस में मारीज गया।तर
चंद्रसेण रा उमरावों रायसिंह ने कासीद मेलिया लिखियो—
आसकरण उग्रसेण दोनूं इण तरह मारीज गया है।हुम, व आप ने
मारी धरती समालो।सो रायसिंह अकबर पातसाह री चाकरी में

काबुल ऊपर मुहम जातो थो।सो कटक ऊपर डरा था।तठ कागद पूगो।तरे रायसिंहजी पातसाह सु मालम कराई।तर पातसाह सोजत दियी।राज पदवी दियी न सीरपाव दियो सो सोजत आय चंद्रसेण र टीके बैठो।संवत् १ ६३ ९ में पातसाह जी काबुल फतह कर पाछा आया।फत्तैपुर गढ रायसिंह जी पछो चाकरी में जाय हाजर हुयो।

अकबर पातसाह राणा उदैसिंह रा बेटा जगमाल सीसोदिया ने आधी सिरोही गढ़ लिख दियो।सो राव सुरताण अमल दियो नहीं। तर जगमाल री मद्दत सिरोही ऊपर फौज मेली न रायसिंह जी ने मेलिया।मती सिरोही इटाण रा गांव दत्ताणी राव सुरताण साथ काम युद्ध कियो।राव सुरताण री फत्ते हुई।राव रायसिंह जी सीसोदिया जगमाल साथ काम आया संवत् १ ६४0 रा काती सुद ११ ।

राव रायसिंह रा इतरा काम आया: १ . रा. गोपालदास ओपा।२. राठौड़ दुरजणसत भाणावत।

समत ७ ७ ९ ७ में जौसी श्री जकिशन ने भाबेर मेहलिया था । सो खर पड़ियो तर झावता मारय में मराया ! न बटा बरस ७ सात रो थो सो जोधपुर मारियां ।

महाराज श्री अजीतसिहजी रे राजलोक क्वरा बाया री बिगत--

४ राणावत प्रमोलक दे जा पीहर रो नाम ऊटोत कवर राणा प्रमरों जी रा भाई गजर्तिहजी राजसिहोत री बेटी समत २ ७ ५२ रा प्रासाढ बद ७ उ६ परणिया सो पाटराएणी था ! जिणा र कवर ने बाया री बिगत--

४ कवर सुरताणप्तिहजी समत ७ ७ ५३ रो जनम थो सो भड गिरघरदास श्रेहमदाबाद मे भूठी भ्ररज करी ।तर महाराज अर्भा जी नू भरम परियां सो चूक कराय मराया ।पद्ध बात भूठी ६ तर ग्रिरधरदास न फुरमायो के तू पेट फुट ने मरसी ।

३ थाई फूलकवर बाई, महाराज बखतसिहजी जेसवमर रा रा अ्खसिंहजी ने समत ८०८% में परसाया ।

४ थाई इ्वरकवर बाई बादशाह फरक्सेर ने समत ७ ७ २* परणाया ।

) बाई फर्तकवर क्वरा चलिया ।(६ुल) कवर बाईया ३ |

४

इणा राणावत जी रो करायोडो मदिर सिखरबद गोल में तु वर जी

भालरा क्न है ।

] बडा चहुवाश जी, चतुरमुज दयालदासात री बंटी सिधला री भाः गाव होटलू रा ।समत ७ ५ ७ रा फ़ायश बद २० ६ परणिया सतो हुवा ।जिणा रे कवरा री बिगत--

४ कवर भमेसिहजा रो जनम ३ ७ ५ ९ रा मिम्सर बद सनिवार? रा ।

२. कवर बखतसिह जी रो जनम समत ७ ६३ रा भादवा बद रो जनम ने दुजा तेजध्घिहजी रो समद ७ ६३/ रा।

३. ७ २२-२३ ई ।२ गुरुवार, जून , ४ ६ ९ ६ ई ३ ४ ७ ८ ६ ।४ ३ ७ ५४ई ।$ ४ ७ ५ ई ।।

& शुद्रआपर परुअरे; २३, १९९५ # ५

२ ७ शनिवार, नवम्बर ७ [७ ०२६।।

८ भगलवार, अगस्त २०] ७ ० ६ई | ९ ४ ७ ० ६ ई ।।

जोधपुर राज्य शो स्यात ४२ ९

]. बड़ा भटियाशी जी, जेसलमेर रा रावल जी री बेटी ।बडा भटियाणों जी पीहूर रो नाव लाल बवर ।जसलमेर रा रावल प्मरतिह सवलप्तिहोत री वेटी | जैसलमेर जाय परणिया पा। सता सत्ती हुवा तिणां रे बवर तीन ३ ने थाई रा | दिखा री बिगत--

] कवर एिसोर्रामिह जी रो समत ७ ६ ६ रो जनम भासोज बद]? रो।

] बवर बडा दोलतसिह जी रो जनम समत ७ ५८£ रो, जनम सो बरस | मे चल गया ।

[कवर जोधर्तिहनी समत ७ ६ ७ ५ रो जनम ने समत ७ ६ ७ में ही खल गया ।

बाई सूरज कबयर, प्रावेर रा राजा सवाई जेसिह जी सईदा सू डरता जाधपुर सरणें झामा, तर सूर सागर महला म डेरा दिराया जद परणाया | सगाई पहला किवी थी बवर ३ वाई]४

छोटा चहुवाण जी गाव रोईडचा रा चवाण फ्तेसिह प्रधीराजोत री बेटी, हजुर चका चलिया जिशा रे कवर तीन--

] वबर भणदमसिह जी समत ७ ६४ श्रासोज बद ५ रो जम ।

] कवर रायसिह जी समत ७ ६८ रा सावण बद २ रोष जम ।

बबर भखेसिह जी बालक थवा चलिया।

हट

१_ छोटा भटियाणीजी, देरावर रा भाटी दलेलसिहजी री बेदी, सती हुमा ।

कबर एक हुदा, सो मास ७ सात रा होय नें चलिया ।

बड़ा तुबर जी श्रमरग दे जी पीहर रो नाम विजेकवर पाटण रा बखसीराम जसवतोत री बेटी समत ७ ६ ७ रा पग्रासाढ बद ४ राव साम० देदा लगन? पधार पररिषया सवाई जतिहजो जानी हुवा था जिणा रे --

] वाई किसोर कवर |

] जाडेची जी, नवानगर रा जाम लाखा जी री बेटी ।इणा सु महाराज री मरजी घणी थी | इणु चादपोल बार बावडी कराई थी ।

रविवार, सितम्बर ७ ८] ७ ० ९ ई ।२ ४ ७ ०- ७ ०२ ६ ।७ ०-] ७ ४ ई ।४ शुक्रवार सितम्बर ५, ७ ० ७ ६ + रविवार जुलाई] ३ ७]]ई +

सोमवार जूबच ४ ।७ ई ७ दिया लम्न |

कप एप ल+

४३०

कवर रतनसिंह जी ने काढ दियो थो सो रतनसिंह पातसाहजी कन जाय तुरक होय फोज ले ने आयो । सो बाप ने काढ दीयो ने रामपुरे अमल कीयो । पछ गोपालसिंह महाराज अजीतसिंहजी कने आयो । सो रतनसिंह मूवा पछ, महाराज पातसाहजी सू अरज कर नें पोता रे नावे जागीरी लिखाय ने गोपालसिंह न रामपुरे बेठाणियो ।

समत 1778[2] रा मे खुमारोत स्यामसिंह मनख्यात आवर सू छाड ने जोधपुर महाराज कनें आयो । सू रोजीना रुपया 1000) हजार कर दिया । पछ रुपया 500) पाच सो कर दिया । पछ तोडा रा गाव लिख दिया । तोडा थी महाराज री जागीरी मे थो । तोड हाकम मुहतो गोपालदास था ।

जसलमेर रा रावल अखराज जी महाराज अजीतसिंह जी रे सरणे आया था ।

समत 1769 रा फागण[3] म भडारी खीवसी रुघनाथ ने अटकाव[4] हुवो । ने दीवाणगी भडारी भाईदास न मुहता गोकलदास मे मेलो दीवी ।

1 भडारी भाईदास दीवाण ।

1 मुहतो गोकलदास सोवेदार, समन्डी रो मुहतो ।

1 जोधपुर री कचेडी हाकम मुहतो गोपालदास किल्याणदासोत जात कोचर ।

1 मडता री कचेडी हाकम, मूहतो भाईदास गोकमदास रा भाई ।

बूदी रा राजा बुधसिंहजी आबर रा राजा जसिहजी रा बन परणिया था । सो जसिह जी री बन घणा बरसा सू आबेर आया । ने उणा री कवर बालक थो सो जसिह जी भाणेज मे ओलखियो[5] नही । जिण सू बूझियो । बाई ने सेज म[6] पूछियो क "बाइ औ किण रो लाड छ ।' सा बाई ओ तर समझिया । न जाब दियो के 'आ ता साग छे पिण थान लाया सो हु जाणू छू ।' जिण सू जसिहजी घणा वेराजी हुआ । हाडा बुधसिहजी रा छोटा भाई दलेलसिहजी नें जसिह जी आप री बटी परणाई । ने दलेलसिहजी साथे फौज मेल बुधसिहजी सु बूदी थारे काढ

[illegible]

[illegible]

1 कंवर प्रतापसिंहजी । संमत 1763[1] री जनम नै संमत 1849 रा
कालिया महाराजा भीमसिंह जी रा राज में ।

1 कंवर पृथ्वीसिंहजी । संमत 1770[2] में चलिया ।

1 बाई बखतावर कंवर ।

3

1 सेखावतजी, मनोहरपुर रा सेखावत जगतसिंह जी री बेटी ब्याही हुआ । जिणा रै

1 बाई सोनागकंवर । उदैपुर रा राणा जगतसिंह जी रा कंवर प्रतापसिंहजी नै महाराणा [illegible] परणाया संमत 1797[4] में ।

---

1 खोखा पहुमाण जी भाणोटी जी । पीहलवाणा रा चौहाण री बेटी । संमत 1780 रा मगसर सुद 9[5] परणिया ।

1 पासवान—भाबीरा पोवारा बलदेव महेसदासोत री बेटी रो डोबी लायो था । [illegible] नहीं । [illegible] पासवान कीवी ।

3 खवासा तीन—चम्पकपुष्प । गुलाबराय । नैणसुख ।

पड़दायतियां, पातरियां, [illegible] बखुतायत घणी थी ।

कंवर 21 बाया 8 हुआ ॥

22— टाणिया 18
